गीना देवी शोध संस्थान
द्वारा पटियाला, श्रीगंगानगर व नेपाल से प्रसारित
साहित्य, शिक्षा, संस्कृति एवं शोध का अंतर्राष्ट्रीय मासिक

Impact Factor : 7.834

ISSN : 2321-8037
Sepecial Issue, February 2025
Volume 13, Issue 2

Gina Shodh SANGAM

AN INTERNATIONAL MULTI DISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)

हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान

विशेषांक सम्पादक मण्डल :
डॉ. निशा मुरलीधरन
डॉ. डी. जयभारती
मिस रानी परिहार
डॉ. तनु श्रीवास्तव

सम्पादक :
डॉ. रेखा सोनी

प्रधान सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

www.ginajournal.com

संस्थापक सम्पादिका :
स्मृति शेष
डॉ. विश्वकीर्ति

संस्थापक संरक्षक :
स्मृति शेष
श्री हरविन्द्र कमल चौधरी

वर्ष : 13 अंक : 2 फरवरी : 2025 (विशेषांक) आईएसएसएन : 2321-8037

सम्पादक :

डॉ. रेखा सोनी
शिक्षा विभाग, टांटिया वि.वि.,
श्रीगंगानगर – 335001 (राज.)

प्रधान सम्पादक :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
सचिव, गीना देवी शोध संस्थान,
भिवानी (हरियाणा)

मार्गदर्शन :

डॉ. राजेन्द्र गोदारा
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. सुरजीत सिंह कस्वां
श्रीगंगानगर, राजस्थान।

डॉ. लक्ष्मी जोशी
त्रिभुवन वि.वि. काठमाण्डू।

इन्जीनियर सृष्टि चौधरी
लेक्चरर, इलेक्ट्रानिक्स
एंड कम्युनिकेशन,
सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज फॉर
गर्ल्स, पटियाला, पंजाब।

श्री श्रेष्ठ चौधरी,
सीनियर मैनेजर,
स्टेट बैंक ऑफ इंडिया,
साहिबजादा अजित सिंह नगर,
मोहाली, पंजाब।

कानूनी सलाहकार :

डॉ. रामफल दलाल एडवोकेट,
श्रीमती रूपिन्द्र कौर, एडवोकेट

सलाहाकार समिति (Advisory Committee)

डॉ. सुलक्षणा अहलावत
अंग्रेजी प्रवक्ता, शिक्षा विभाग
नूंह (हरियाणा)

डॉ. अरूणा अंचल
बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय,
रोहतक (हरियाणा)

डॉ. सुशीला
चौधरी बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी।

डॉ. अल्पना शर्मा
आईएएसई विश्वविद्यालय सरदारशहर

डॉ. विजय महादेव गाडे
बाबा साहेब चितले महाविद्यालय
भिलवडी (महाराष्ट्र)

डॉ. लता एस. पाटिल
राजीव गांधी बीएड कॉलेज
धारवाड़ (कर्नाटक)

डॉ. रीना कुमारी
दशमेश गर्ल्स कॉलेज,
अल्ला बक्श, मुकेरिया, पंजाब।

श्री राकेश शंकर भारती
यूक्रेन।

श्री हेमराज न्यौपाने
नेपाल।

डॉ. ममता तनेजा
अबोहर, पंजाब।

डॉ. प्रियंका खंडेलवाल
बराण, राजस्थान।

डॉ. संदीप
ओम विश्वविद्यालय, हिसार।

प्रो. मधुबाला
राजकीय महिला महाविद्यालय, हिसार।

डॉ. पीयूष कुमार द्विवेदी
जगद्गुरू रामभद्राचार्य दिव्यांग
विश्वविद्यालय, चित्रकूट, उत्तरप्रदेश

डॉ. हवासिंह ढाका
राजकीय महाविद्यालय, हिन्दुमलकोट,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मानसिंह दहिया
संस्कृत प्रवक्ता, शिक्षा विभाग हरियाणा

डॉ. राजेश शर्मा
टांटिया विश्वविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राजस्थान)

डॉ. मोहिनी दहिया
माती जीतोजी कन्या महाविद्यालय,
सूरतगढ़ (राजस्थान)

डॉ. मुद्दस्सिर अहमद भट्ट
हिन्दी विभाग,
कश्मीर विश्वविद्यालय श्रीनगर, कश्मीर

डॉ. सीहेच वी. महालक्ष्मी
सीहेच एसडीएसटी थेरेसा महिला
महाविद्यालय, एलुरू, आंध्र प्रदेश

डॉ. मोरवे रोशन के.
यूनाईटिड किंगडम।

डॉ. अनुपमा, पूर्व प्रोफेसर,
अंकारा विश्वविधालय, अंकारा, टर्की

डॉ. आर.के विश्वास
अध्यक्ष होम्योपैथिक, टांटिया, वि.वि.

प्रकाशक, स्वामी एवं मुद्रक डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, पुराना बस स्टैण्ड रोड़, नया बाजार, भिवानी से छपवाकर 202, पुराना हाउफसिंग बोर्ड, भिवानी-127021 (हरियाणा) से जारी किया।

संगम SANGAM

बहुभाषिक बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक

AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL

(Journal of Literature, Arts, Science, Commerece, Culture, Humanities and Social Sciences)

सचिव :

डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट

202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड,

भिवानी-127021 (हरियाणा)

Email : grngobwn@gmail.com

मो. 09466532152

संगम मासिक पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं/लेखों की मौलिकता का दायित्त्व स्वयं रचनाकारों/लेखकों का है। उससे सम्पादक व प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं। किसी भी प्रकार का विवाद होने पर न्यायक्षेत्र केवल भिवानी (हरियाणा) होगा। सम्पादन और प्रबंध्न के सभी पद पूर्ण रूप से अवैतनिक हैं।

Published by :

Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

202, Old Housing Board,

Bhiwani-127021 (Haryana) INDIA

Email : grsbohal@gmail.com

Facebook.com/bohalshodhmanjusha

Website : www.bohalsm.blogspot.com

WhatsApp : 9466532152

All Right Reserved by Publisher & Editor

Price

Individual/Institutional : 1300/-

<u>*Disclaimer :*</u>

1. Printing, Editing, Selling and distribution of this Journal is absolutely honorary and non-commercial.
2. All the Cheque/Bank Draft/IPO should be sent in the name of Gugan Ram Educational & Social Welfare Society payable at Bhiwani.
3. Articles in this journal do not reflect the Views or Policies of the Editor's or the Publisher's. Respective authors are responsible for the originally of their views/opinions expressed in their articles.
4. All dispute will be Subject to Bhiwani, Hry. Jurisdication only.

Printed by : Manbhawan Printers, Old Bus Stand Road, Naya Bazar, Bhiwani (Hry.)

Impact Factor : 7.834
ISSN : 2321-8037
Gina Shodh SANGAM
Peer Reviewed & Refereed Research Journal
International Journal of Literature, Arts, Culture, Humanities and Social Sciences
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 2018)
Publisher : Gugan Ram Educational & Social Welfare Society (Regd.)

तालिका– 2

शैक्षणिक/ शोध अंक की गणना हेतु विश्वविद्यालय और महाविद्यालय के शिक्षकों के लिए कार्यप्रणाली

(आकलन शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्यों पर आधारित होना चाहिए, जैसेः प्रकाशनों की प्रति, परियोजना स्वीकृति पत्र, विश्वविद्यालय द्वारा जारी उपयोग तथा पूर्णता प्रमाण पत्र, पेटेंट दर्ज कराने संबंधी अभिस्वीकृति और स्वीकृति पत्र, विद्यार्थियों को पीएचडी उपाधि प्रदान किए जाने संबंधी पत्र इत्यादि।)

क्रम सं.	शैक्षणिक / शोध क्रियाकलाप	विज्ञान/ अभियांत्रिकी/ कृषि/चिकित्सा/ पशु–चिकित्सा विज्ञान संकाय	भाषा/ मानविकी/कला/ सामाजिक विज्ञान/ पुस्तकालय/शिक्षा/ शारीरिक शिक्षा/ वाणिज्य / प्रबंधन तथा अन्य संबंधित विधाएं
1	समकक्ष व्यक्ति समीक्षित अथवा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा सूचीबद्ध पत्रों में शोध पत्र	08 प्रति पत्र	10 प्रति पत्र
2	प्रकाशन (शोध पत्रों के अतिरिक्त)		
	(क) लिखी गई पुस्तकें, जिन्हें निम्नवत के द्वारा प्रकाशित किया गया :		
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक	12	12
	राष्ट्रीय प्रकाशक	10	10
	संपादित पुस्तक में अध्याय	05	05
	अंतर्राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	10	10
	राष्ट्रीय प्रकाशक द्वारा पुस्तक का संपादक	08	08
	(ख) योग्य संकाय द्वारा भारतीय और विदेशी भाषाओं में अनुवाद कार्य		
	अध्याय अथवा शोध पत्र	03	03
	पुस्तक	08	08
3	आईसीटी के माध्यम से शिक्षण ज्ञान– अर्जन, शिक्षण शास्त्र और विषयवस्तु का सृजन तथा नए और नवोन्मेषी पाठ्यक्रमों और पाठ्यचर्या का विकास		
	(क) नवोन्मेषी अध्यापन का विकास	05	05
	(ख) नई पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रमों को तैयार करना	02 प्रति पाठ्यचर्या/ पाठ्यक्रम	02 प्रति पाठ्यचर्या/ पाठ्यक्रम

202, Old Housing Board, Bhiwani, Haryana-127021
www.bohalsm.blogspot.com grsbohal@gmail.com 8708822674 9466532152

अनुक्रमाणिका

क्र.	विषय	लेखक	पृष्ठ
1.	सम्पादकीय	डॉ. निशा मुरलीधरन	08-08
2.	चित्रा मुद्गल और सुधा ओम ढींगरा की कहानियों में स्त्री लेखन का योगदान	CHEVALIER T.	12-14
3.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	डॉ. अमलपुरे सूर्यकांत विश्वनाथ	15-20
4.	हिन्दी प्रवासी साहित्य की अवधारणा	डॉ० नरसिंह राव कल्याणी	21-23
5.	प्रवासी साहित्यकार के रूप में लक्ष्मी शर्मा का परिचय और उनकी रचनाएँ	सिमरन कोठारी	24-29
6.	भारतीय प्रवासी हिन्दी साहित्य में महिला लेखिकाओं का योगदान	Dr. R. KAVITHA	30-33
7.	सुषम बेदी के साहित्य में प्रवासी नारी संघर्ष	डॉ. आलपाटि भानु प्रसाद	34-36
8.	हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	Dr. R. N. Sheela	37-39
9.	अभिमन्यु अनत कृत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित रंगभेद की समस्या	वि. अमुधा, डॉ. अनुराधा पाकलपाटि	40-45
10.	प्रवासी जीवन और साहित्य	डॉ. कविता चौहान	46-51
11.	हिन्दी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	दीपा कुमारी	52-54
12.	प्रवासी जीवन और साहित्य	कविता देवी	55-56
13.	प्रवासी हिन्दी साहित्य - एक विहंगम दृष्टि	डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	57-61
14.	प्रवासी साहित्य : जीवन मूल्यों की टकराहट	डॉ. सरिता चौहान	62-69
15.	अंजना संधीर के प्रवासी हिंदी काव्य में अमरीकी प्रवासी जीवन चित्रण	श्रीमती सविता अधाना	70-76
16.	चित्रा बैनर्जी दिवाकरूणी के उपन्यास "सीतायम" : उदात्त मानवी गुणों का ग्रहण	प्रो. एस. प्रसन्ना देवी	77-83
17.	'आओ पेपे घर चलें' उपन्यास के आइलिन की अंतर्वेदना	डॉ. विक्रम बालकृष्ण वारंग	84-87
18.	नीदरलैंड व बेल्जियम में हिन्दी भाषा व भारतीय संस्कृति के प्रति बढ़ती अभिरूचि	डॉ. सतीश कुमार भारद्वाज	88-93

19.	प्रवासी हिन्दी साहित्य की अवधारणा एवं स्वरूप और विशेषताएं	डॉ. पुष्पेन्द्र सिंह	94–98
20.	प्रमुख प्रवासी साहित्यकार और उनके योगदान	रेखा कुमारी	99–104
21.	प्रवासी जीवन और साहित्य	डॉ. सुमित्रा देवी	105–107
22.	रूकोगी नहीं राधिका/स्वयं के साथ अन्याय करती स्त्री पीड़ा की कहानी	डॉ. ममता शर्मा श्रीमती रिंकू शर्मा	108–115
23.	प्रवासी हिन्दी साहित्य में स्त्री लेखन का योगदान	डॉ.	116–125
24.	हिंदी के प्रवासी कहानियों में बुजुर्गो की व्यथा	जयकला. ए, सुमा. टी. आर	126–128
25.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	गंगा शिवाजी यरोळकर	129–134
26.	हिंदी साहित्य में प्रवासी महिला साहित्यकारों की भूमिका : डॉ. ऋतु शर्मा नंनन पाण्डे के विशेष संदर्भ में	डॉ. ओम ऋषि भारद्वाज	135–139
27.	प्रवासी जीवन और साहित्य	जितेंद्र सिंह दायमा	140–144
28.	प्रवासी लेखिका डॉ. पुष्पा सक्सेना की कहानियों में प्रवासियों की पीड़ा	डॉ. ऋषिकेश श्रीवास्तव	145–152
29.	वैश्विक संदर्भ में हिन्दी प्रवासी साहित्य	कमलेश कुमार वर्मा	153–156
30.	हिंदी साहित्य में प्रवासी साहित्यकारों का योगदान	डॉ. सोनिया दहिया, डॉ. रीना देवी गोरा	157–159
31.	प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति और परंपराएँ : एक विस्तृत विश्लेषण	डॉ. सरोज सिंह	160–165
32.	डॉ. राजेन्द्र टोकी के ''अश्'आर और कत'आत'' में सामाजिक यथार्थ	चन्द्र शेखर, डॉ. अरविंदर कौर चुंबर	166–170
33.	वैश्विक संदर्भ में हिंदी प्रवासी साहित्य	सेठी आशा दिनबंधु, डॉ. महेश एम. पटेल	171–173
34.	प्रवासी साहित्य की अवधारणा एवं विशेषताएँ	सागर एस. गेंड़	174–177
35.	मजदूरों की करूण त्रासदी : लाल पसीना (अभिमन्यु अनत)	नंदिनी कुमारी, प्रो. इंदु यादव	178–185

36.	सुषम बेदी की प्रमुख कहानियों में स्त्री–वेदना	ज्योति	186–189
37.	'शाम भर बातें' में प्रवासी लोगों के सांस्कृतिक एवं धार्मिक मूल्य	खुशी वशिष्ठ	190–194
38.	ए.बी.सी.डी. उपन्यास में पीढ़ीगत संघर्ष–संस्कृति के संदर्भ में	डॉ. आर. विजयलक्ष्मी	195–196
39.	प्रवासी हिन्दी साहित्यकार उषा प्रियंवदा का योगदान	डॉ. रेनू सिंह	197–199
40.	प्रवासी साहित्य की परिभाषा और विशेषताएँ	**Dr. Anupama**	**200-205**
41.	हिंदी के प्रवासी कहानियों में बुजुर्गों की व्यथा	जयकला. ए, सुमा. टी. आर	206–208
42.	हिंदी के उपन्यासों में प्रवासी नारी का जीवन	डॉ काकानि श्रीकृष्ण	209–211
43.	प्रसिद्ध प्रवासी साहित्यकार और उनके योगदान	डॉ. डी. जयभारती	212–216

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
Vol. 13, Issue 2
पृष्ठ : 40–45

अभिमन्यु अनत कृत उपन्यास 'हड़ताल कल होगी' में चित्रित रंगभेद की समस्या

वि. अमुधा, शोधार्थी
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि, सहायक प्राध्यापक एवं शोध निर्देशिका
हिन्दी विभाग, वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस टेक्नोलॉजी एण्ड एडवांस्ड स्टडीस (विस्टास) पल्लावरम, चेन्नई–600117

सार

'रंग भेद' का मतलब है 'रंगों के आधार पर समाज में व्यक्तियों के बीच भेदभाव करना'। मॉरिशस में पहले दक्षिण अफ्रीका समुदायों की दशक की शुरुआत हुई। रंग भेद एक नस्लीय अलगाव की प्रणाली थी। इसे 'अपार्टाइट' या 'अलग होने की स्थिति' भी कहा जाता है। इसका मक्सद गोरे और काले लोगों को अलग रहने के लिए बाध्य करता है। मॉरिशस एकीकृत बहुजातीय समाज है। अप्रवासियों को मूल मॉरिशस के लोगों से सफेद पोश नौकरियाँ छीनने वाला मानते हैं।

मुख्य शब्द

रंगभेद, शोषण, नस्लवाद, साजिश, हक

प्रस्तावना

इस प्रपत्र में अभिमन्यु अनत जी द्वारा रचित 'हडताल कल होगी' उपन्यास में चित्रित शारीरिक रंग के भेदभाव की समस्या के विभिन्न संदर्भों का विस्तार वर्णन प्रस्तुत करने वाली हूँ। इस उपन्यास में अनत जी गोरे मालिकों और काले मजदूरों के बीच के संघर्ष को उजागर किया है। इस उपन्यास में रंगभेद का दुर्व्यवहार का चित्रण किया गया है। उससे संबंधित कई तरह के घटनाओं का वर्णन मिलता है। "चमड़ी के एक खास तरह के रंग, बालों, शरीर के आकार-प्रकार और चेहरे के नाक-नक्शे से जोड़ कर उस समूह के सभी सदस्यों मे कुछ योगयताएँ या अयोगयताएँ आरोपित की जाती हैं। इस प्रकार एक नस्ली छवि बना ली

जाती है।"[1] मॉरिशस में प्रवासी भारतीयों को उनके रंग के कारण कई तरह के शोषण अनुभव किए और लेखक भी इस प्रथा के बाध्य हैं।

विषयः

अमित मॉरिशस में रहने वाला एक अप्रवासी भारतीय लडका है और उसके पिताजी मॉरिशस के सरकारी काम में उच्च पद में कार्यग्रस्त हैं। अमित एक साधारण व्यक्ति की भांति धन कमाने में इचछुक् नहीं था। वह मजदूरों के हक के लिए लडना चाहता है। उसे एक अच्छी नौकरी के लिए उसके पिताजी ने सिफारिश की थी, पर अमित को किसी तरह की सिफारिश बिलकुल पसंद नहीं है। अमित ऐसा युवा वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है, जो अपने व्यक्तिगत माँगों को परित्याग करके मजदूरों के अधिकार के लिए लडना चाहता है। इस उपन्यास में एक और मुख्य पात्र है, जानीन, जो फ्रांसीसी मूल की लडकी है और मारिशस में पली बढ़ी है। इस उपन्यास में रंग-भेद की समस्या को लेखक अभिमन्यु ने शिक्षा, कला, प्रेम विवाह, काम-काजी जगहों में मजदूर और सरदारों के बीच वैषम्य जैसे अलग-अलग संदर्भों में अमित, जानीन और किशोर पत्रों के माध्यम से चित्रण किया है।

शिक्षा के क्षेत्र में रंग भेद

मॉरीशस के शिक्षा क्षेत्र में काले और गोरे रंग व्यक्तियों के लिए अलग-अलग पाठशालाएँ बनवाए गए थे। जहां फ्रांसीसी मूल के वारिसों को स्कूल में दाखिला करते थे वहाँ अफ्रीकी एवं भारतीय मूल संतानों को भर्ती नहीं दिया जाता था। बाल अवस्था में ही इनके बीच लकीर खींचा जाता था। इसकी समस्या को 'हड़ताल कल होगी' में अनत जी जानीन पात्र के माध्यम से चित्रित किया है। जानीन जब छोटी थी उसे गोरे लोगों के लिए बनवाए गए अलग स्कूल में दाखिला लिया गया। उसे यह बात समझ में नहीं आई, जब वह अपनी माँ से इस बात को पूछती है तब उसकी माँ उसकी बातों को नजरअंदाज करती थी। जानीन गोरे लोगों का विशेष माध्यमिक स्कूल में पढ़ाई की । जानीन जब कालेज में पढ़ती थी, एक घटना घटी। उस कालेज में सभी अध्यापक और छात्र गोरे थे, सिर्फ तीन लोग काले थे- एक चपरासी, दो माली। एक माली के मृत्यु के बाद एक नया आदमी काम पर आया, जो काला था। सभी लोग उस माली की धोती खींचकर मजाक कर रहे थे। उसके पीठ पर चिपकाया -

" मालवार लंगूची
न्वार कुमां लोची"[2]

सब लड़के और लड़कियाँ माली को घेरकर गाने लगे ।

दोबारा कॉलेज में माली की धोती खींची गई। सब छात्र उसे छेडकर गाना गाने लगे - "लंगोटी पहने हिंदू गवार, रंग होवे मसूर की दाल"[3] जानीन यह दृश्य देखकर बहुत भावुक हो जाती है ।

मिशेल इस उपन्यास के एक और पात्र है, जो मॉरिशस के युवासंग के सदस्य था। अमित भी मिशेल के साथ रंगमंच में भाग लेता था। युवा मंत्रालय द्वारा आयोजित नाट्य प्रतियोगिता में तीन बार प्रथम अभिनेता था। फ्रेंच भाषा में उसका अच्छी पकड़ थी। जब फ्रांस सरकार ने छात्रवृत्ति की घोषणा की, मिशेल को उसे पाने की ख्वाइश थी लेकिन क्रियोली होने के कारण उसे नहीं मिला। एक गोरे को ही छात्रवृत्ति दी गई। शिक्षा की क्षेत्र में भी जो लोग काबिलीयत है, उन्हें उचित प्रोत्साहन न मिल रहा है। वहाँ भी रंग भेद की समस्या उभरी है।

कलाकार और रंग भेद

अमित का करीबी दोस्त था किशोर। किशोर एक चित्रकार था। अमित को खूब पता था कि किशोर बेमिसाल चित्र बनाता था फिर भी गोरे न होने के कारण उसकी मेहनत रंग नहीं ला रही थी। किशोर ने अमित को खबर दी कि किसी फ्रांसीसी के पंद्रह चित्र को सरकार अपने दफ्तरों के लिए खरीद लिया था। इस बात पर अमित के पत्र व्यवहार पर सरकार ने कोई उत्तर नहीं दिया था किशोर अपनी प्रदर्शनी की तैयारी में व्यस्त था। अमित उसके होसले बढ़ाते हुए कहता है कि उसके सभी चित्र हाथोंहाथ बिक जाएँगे। अमित ने सोचा कि किशोर को अपना परिश्रम का फल एक न एक दिन जरूर मिलेगा। अफसोस की बात यह थी कि पाँच दिन की प्रदर्शनी में किशोर के केवल चार चित्र ही बिखी। इससे अपमानित होकर किशोर ने आत्महत्या कर लेता है। इससे अमित अत्यंत दुखी हो जाता है। अमित के मन में प्रश्न उत्पन्न होता है कि इस समाज ने एक कलाकार को उसकी कला की दृष्टि से कभी नहीं देखा, उसके रंग के आधार पर ही उसके काम को तोला जाता है। इस रंग भेद की समस्या एक सजीव कलाकार को अपनी कला से नफरत करने पर मजबूर कर देती है। इस समस्या को अनत जी अपनी रचना में व्यक्त करते हैं -"किशोर अगर गोरा होता तो क्या उसकी कला इसी तरह अर्थहीन रह जाती? इसमें दोष किसका था? जन्म के संयोग का या सामाजिक मनोवृत्ति का?"[4] किशोर के माध्यम से अनत जी उन निराश कलाकारों के मन की व्यथा का चित्रण किया है जो अपनी प्रवास देश में अपनी कला एवं प्रतिभा का कोई महत्त्व नहीं मिलता है।

प्रेम विवाह और रंगभेद

अमित का परिचय जानीन के साथ एक कला प्रदर्शन के दौरान हुआ था। धीरे-धीरे उनकी दोस्ती प्यार में बदल जाता है। जानीन के पिता ने पहले भी अमित को धमकी दी कि अगर वह जानीन से मिलना बंद नहीं करेगा तो बाद में उसे पछताना पड़ेगा। उसे समुद्र में फेंकने का धमकी दी जाती है। जानीन की दादी भी इसी विषय पर बल देती है। लेखक के अनुसार जानीन की दादी अपने विचार को कुछ इस तरह व्यक्त करती है-"प्यार अपनी बराबर के लोगों के साथ होता है।"[5] जानीन के पिता के माध्यम से अनत जी उन गोरे लोगों की जातीय अहं को दर्शाया है।

एक दिन जानीन अमित को अपने घर में दावत के लिए बुलाती है। अमित पहले इस प्रस्ताव को स्वीकार करता है, पर बाद में एक गोरे के घर में जाने के लिए हिचकता है। जानीन की चित्रशाला अमित के घर के जैसा था। अमित सोचता है कि जानीन का घर मालिकों द्वारा शोषित उन काले मजदूरों से बना है। अमित जानीन से कहता है कि आखिर आदमी को जीने के लिए इतना बड़ा घर नहीं चाहिए, बल्कि थोड़ा-सा प्यार, खुशी और थोड़ी-सी आशा की ज़रूरत है।

एक दिन अचानक अमित एक सड़क दुर्घटना में घायल हो जाता है। अमित ने पहले सोचा कि यह दुर्घटना तो स्वाभाविक है, पर बाद में उसको पता चलता है कि यह दुर्घटना जानीन के पिता की साजिश है। अमित को पूरा विश्वास था उसकी माँ जानीन को अपनी बहू जरूर बनाएगी, पर उसकी माँ ने कह दिया कि मॉरीशस में एक गोरे लड़की से प्यार करना नामुमकिन चीज़ है। उसकी माँ ने इस विषय में कहती है- "गोरे लड़की के साथ तुम्हारी शायद दोस्ती हो सके पर वह तुम्हें प्यार भी करे, यह न कभी हुआ है और न कभी होगा।"[6] अनत जी अमित और जानीन के प्यार के द्वारा यह दर्शाते हैं कि आजादी के बाद भी गोरे-काले व्यक्तियों का सामाजिक मिलन असंभव है।

मज़दूर और रंगभेद

अमित हमेशा मारिशस के अप्रवासी भारतियों के हक के लिए लड़ना चाहता था। वह मजदूरों को संगठित करके हडताल करने के लिए प्रेरित करता है ताकि वे एक सुखमय जीवन जी सके। उसे एक अच्छी नौकरी के लिए उसके पिताजी सिफारिश की थी, पर अमित को सिफारिश बिलकुल पसंद नहीं था। अमित अपनी नौकरी से त्याग-पत्र देकर मज़दूर यूनियन में शामिल हो जाता है। मज़दूरों ने शक्कर कोठी के मालिक के विद्रोह में हडताल करने में जुटे थे। उन्होंने वेतन बढ़ाने की माँग को भी मालिक के सामने रखे थे। चार दिन के हडताल के बाद मालिक मजदूरों के सामने आए. मजदूरों के रंग भेद की समस्या उच्च स्तर तक फैल गई।

सरदारों ने मिलकर मज़दूरों के खिलाफ अपनी घृणा दिखाते हुए ओलिव्या बस्ती में आग लगा देते है। इस बात पर अमित मज़दूरों से कहता है "इस कोटी मे इन्साफ की मौत हो गई है। इन्साफ बडी चीज होती है।"[7] अमित उस घटना को कभी भी नहीं भूल पाया था। आग की लपेटों में कई झोपडियाँ ध्वंस हो गई। अमित ने दो मेमनों को बाहर किया था और एक सात वर्षीय लड़की की जान बचाई थी। दूस्रे ही दिन पीडितों को बचाने के लिए पैसा इकट्ठा करने का जिम्मा भी उसने ले लिया। उस घटना ने अमित की मनोभावना को बिल्कुल बदल दिया। उसने अपने जीवन में मजदूरों के साथ लड़ने के लिए ठान लिया था।

निष्कर्ष

वर्तमान दौर में मीडिया द्वारा खबर मिलती रहती है कि विश्व के कई देशों में अप्रवासी भारतीय रंग भेद की समस्या के शिकार तो होते हैं, लेकिन कई बार नस्ल्वाद हिंसों में मारे भी जाते हैं। अनत जी जैसे प्रवासी साहित्यकार अपने अनुभवों को अपने साहित्य में कलमबद्ध करते आ रहे हैं। अनत जी 'हडताल कल होगी' उपन्यास में रंग भेद समस्या का एक सजीव चित्रण पाठकों के सामने उबरती है। अनत जी इस उपन्यास में अपने पात्रों के द्वारा मॉरीशस में रहने वाले प्रवासी भारतीयों के अनुभवों का मार्मिक चित्रण करते हैं। आशा है कि विश्व में हम ऐसे समाज की स्थापना करें, जिसमें कोई रंग भेद या नस्लवाद न हो। लोगों की प्रगतिशील मानसिकता से ही ऐसा स्थिति संभव है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :-

1. पृ. 141, डा. सुनील पाठिल, प्रवासी साहित्य में भारतीय संस्कृति (2021)
2. पृ. 40 अभिमन्यु अनत, हडताल कल होगी, सरस्वती विहार
3. पृ.41 अभिमन्यु अनत, हडताल कल होगी, सरस्वती विहार
4. पृ.12 अभिमन्यु अनत, हडताल कल होगी, सरस्वती विहार
5. पृ.42 अभिमन्यु अनत, हडताल कल होगी, सरस्वती विहार
6. पृ.23 अभिमन्यु अनत, हडताल कल होगी, सरस्वती विहार
7. पृ.170 अभिमन्यु अनत, हडताल कल होगी, सरस्वती विहार

ईमेल: amudhav197910@gmail.com

संपर्क : 9840824531

संगम Impact Factor : 7.834
Website : www.ginajournal.com
ISSN : 2321-8037
SANGAM
गीना देवी शोध संस्थान द्वारा प्रकाशित बहुभाषिक-बहुविषयक शोध को समर्पित अंतर्राष्ट्रीय मासिक
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY MONTHLY MULTI LANGUAGE PEER REVIEWED REFEREED RESEARCH JOURNAL
Vol. 13, Issue 2
पृष्ठ : 46-51

प्रवासी जीवन और साहित्य

डॉ. कविता चौहान
सहायक आचार्या, हिन्दी विभाग, गुरू नानक खालसा कॉलेज, यमुनानगर (हरियाणा)

सारांश :

प्रवासी वह व्यक्ति होता है जो काम या आश्रय की तलाश में एक जगह को दूसरी जगह जाता है । प्रवासी साहित्य, भारतीय मूल के लोगों द्वारा विदेशों में लिखे गए साहित्य को भी कहते है प्रवासी साहित्य में पुरुषों की अपेक्षा स्त्री लेखकों की संख्या ज्यादा है । प्रवासी साहित्य हिन्दी और अंग्रेजी भाषा में सर्वाधिक देखने को मिलता है । प्रवासी साहित्य में भारतीय और पश्चिमी संस्कृति के मध्य झूलते प्रवासी भारतीयों के मानसिक आंदोलन का चित्रण होता है । प्रवासी साहित्य में प्रवासी भारतीय जीवन और समाज की सच्चाई को पूरी तन्मयता से कलम के माध्यम से उकेरता है । प्रवासी साहित्य में भारतीयों की सामाजिक, आर्थिक, नैतिक, धार्मिक समस्याओं का वर्णन मिलता है । इक्कीसवी सदी में भारत की संस्कृति अस्त–व्यस्त होती जा रही है । प्रवासी साहित्य में प्रवासियों के मूल देश के सामाजिक संदर्भो पर केन्द्रित होता है, जो उन्हें देश छोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं प्रवासन के माध्यम से सांझा समृद्धि और गरीबी उन्मूलन में महत्त्वपूर्ण योगदान देती है । प्रवास के द्वारा विभिन्न संस्कृतियाँ आपस में सम्पर्क में आती है । जिससे सामाजिक मूल्यों में वृद्धि होती है । परन्तु प्रवास के कारण कभी–कभी नकारात्मक पक्ष भी दिखाई पड़ते हैं ।